ई-लर्निंग और भारत के गाँव

अंजू शर्मा, शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान (भारत)

सारांश

वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी विकास ने सीखने और सिखाने की पारंपरिक पद्धतियों में व्यापक परिवर्तन किया है। ई-लर्निंग आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है, जिसने शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला एवं सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में ई-लर्निंग की स्थिति, संभावनाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना है। भारत के गाँवों में आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षकों की उपलब्धता, विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की कमी तथा शैक्षिक संसाधनों तक सीमित पहुँच जैसी अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। ऐसी परिस्थितियों में ई-लर्निंग ग्रामीण विद्यार्थियों को डिजिटल माध्यमों से शिक्षा प्राप्त करने के नए अवसर प्रदान करती है। स्मार्टफोन, इंटरनेट, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कक्षाओं तथा शैक्षिक मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से ग्रामीण विद्यार्थी विभिन्न विषयों की जानकारी एवं गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या, बिजली की अनियमित उपलब्धता, आर्थिक असमानता तथा डिजिटल साक्षरता की कमी ई-लर्निंग के प्रभावी क्रियान्वयन में प्रमुख बाधाएँ हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ई-लर्निंग केवल शिक्षा प्राप्त करने का तकनीकी माध्यम नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज में सामाजिक परिवर्तन, शैक्षिक समानता, महिला शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। इस अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा की उपयोगिता, उसकी सीमाओं तथा सरकारी प्रयासों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल आधारभूत संरचना, इंटरनेट सुविधाओं एवं डिजिटल साक्षरता का उचित विकास किया जाए, तो ई-लर्निंग भारत के ग्रामीण समाज में शैक्षिक असमानता को कम करने तथा समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।